गोस्वामी तुलसीदास

राम-काव्य धारा में तुलसी का स्थान

राम-काव्य-धारा का मूल उद्‌गम स्थल 'वाल्मीकि रामायण' है। इससे पूर्व राम-कथा का कोई सुव्यवस्थित एवं समृद्ध काव्य नहीं मिलता। 'वाल्मीकि रामायण' का रचना-काल 600 ई. पू. से 400 ई. पू. तक माना जाता है। तदनन्तर राम-काव्य का उल्लेख 'महाभारत' के वनपर्व, द्रोणपर्व, शान्तिपर्व एवं सभापर्व में मिलता है। वनपर्व में 'रामोपाख्यान' के रूप में राम-कथा विस्तारपूर्वक मिलती है, जिसका मूलाधार भी 'वाल्मीकि रामायण' है। इसके उपरान्त बौद्ध जातकों में 'दशरथ-जातक' के अन्तर्गत राम-कथा का वर्णन मिलता है, परन्तु उसमें काव्यात्मक सौन्दर्य का सर्वथा अभाव है। बौद्धों के अतिरिक्त जैन ग्रन्थों में से विमलसूरि कृत 'पउम चरिउ', 'पम्प रामायण' तथा गुणभद्र कृत 'उत्तर रामायण' में भी राम-काव्य के दर्शन होते हैं। इसके साथ ही पद्म पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, श्रीमद्‌भागवत पुराण, नृसिंह पुराण, विष्णु पुराण, अग्नि पुराण आदि में भी राम-काव्य का उल्लेख मिलता है जिसमें काव्यात्मक सौन्दर्य की अपेक्षा वर्णनात्मकता का ही प्राधान्य है। इनके अतिरिक्त अध्यात्म रामायण, महारामायण, आनन्द रामायण, भुशुण्डि रामायण, अद्‌भुत रामायण आदि कुछ पौराणिक ढंग के रामायण ग्रन्थ मिलते हैं, जिनमें राम-काव्य के सुन्दर एवं सजीव रूप का दर्शन होता है।

संस्कृत एवं प्राकृत-अपभ्रंश के उक्त प्राचीन ग्रन्थों के अतिरिक्त संस्कृत के कतिपय महाकाव्यों एवं नाटकों में भी राम काव्य के दर्शन होते हैं। इनमें से कालिदास कृत 'रघुवंश' राम-काव्य की दृष्टि से सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ है। इसके अतिरिक्त अभिनन्दन कृत 'रामचरित', करि भट्टि कृत 'रावण-वध', भौमिक भट्ट कृत 'रावणार्जुनीय', कुमारदास कृत 'जानकी हरण', क्षेमेन्द्र कृत 'रामायण मंजरी', मल्लिनाथ कृत 'रघुवीर चरित' प्रसिद्ध रास-काव्य हैं। संस्कृत नाटकों में से भवभूति कृत 'उत्तर रामचरित', मुरारि कृत 'अनर्घराघव', राजशेखर कृत 'बालरामायण', मधुसूदन और दामोदर कृत 'हनुमन्नाटक', जयदेव कृत 'प्रसन्नराघव' आदि नाटक भी उत्कृष्ट रामकाव्य की कोटि में आते हैं।

उक्त राम-काव्यों के अतिरिक्त मराठी में एकनाथ कृत 'भावार्थ रामायण', केशवराज कृत 'रामायण', स्वयंभू देव कृत 'रामायण पुराण', बंगला में कृतिवास कृत 'रामायण', द्विज अनन्त कृत 'अनन्त रामायण', असमिया में शंकरदेव कृत 'उत्तरकाण्ड' एवं 'श्रीराम विजय नाटक', उड़िया में 'जगन्मोहन रामायण', 'विलंका रामायण' एवं 'विचित्र रामायण', गुजराती में नागर कृत 'रामायण', कहान कृत 'रामायण', काशीसुत कृत 'हनुमन्त चरित', देव विजय मणि कृत 'रामचरित्र' आदि तमिल में 'तमिल रामायण', तेलुग में 'द्विपाद रामायण', मलयालम में 'इराम चरित', कन्नड़ में 'तोरावे रामायण' आदि अनेक राम-काव्य मिलते हैं जो प्रचुर काव्यात्मक सौन्दर्य से ओतप्रोत हैं तथा जिनका मूलाधार वाल्मीकि रामायण है।

हिन्दी में भी राम-काव्य की विस्तृत परम्परा मिलती है। हिन्दी में सर्वप्रथम सं. 1342 में लिखित कवि भूपति कृत 'रामचरित रामायण' का संकेत मिलता है, परन्तु उसकी अभी तक कोई प्रतिलिपि उपलब्ध नहीं है। हिन्दी में तुलसी ही राम काव्य के प्रमुख कवि हैं। तुलसी के समकालीन कवियों में से मुनिलाल कृत 'रामप्रकाश' काव्य मिलता है, जो रीतिशास्त्र के आधार पर लिखा गया है। इसके अतिरिक्त इसी काल में नाभादास ने राम-भक्ति सम्बन्धी कुछ सुन्दर पद लिखे हैं। महाकवि केशव ने 'रामचन्द्रिका' नामक महाकाव्य की रचना की है, जिसमें काव्य-कौशल का तो प्राधान्य है, किन्तु चरित्र-चित्रण एवं प्रबन्धात्मकता की उपेक्षा की गई है। सेनापति ने भी अपने 'कवित्त रत्नाकर' में चौथी एवं पाँचवीं तरंगों के अन्तर्गत रामायण एवं राम-रसायन का वर्णन किया है। तुलसी के समकालीन कवियों के उपरान्त भी हिन्दी में राम काव्य के दर्शन होते हैं। इनमें से हृदयराम कृत 'हनुमन्नाटक' मिलता है, जिसमें राम-भक्ति का ही सुन्दर विवेचन मिलता है। तदुपरान्त प्राणचन्द्र चौहान कृत 'रामायण महानाटक' मिलता है, जो संवाद रूप में लिखा गया है, किन्तु जिसमें उत्कृष्ट काव्य-सौन्दर्य के दर्शन नहीं होते। तत्पश्चात् लालदास कृत 'अवध-विलास', मिलता है, जिसमें राम-सीता की विविध लीलाओं का वर्णन मिलता है और रामप्रियाशरण कृत 'सीतायण' ग्रन्थ मिलता है, जिसमें सीताजी के चित्रण की प्राधानता है तथा राम कथा का भी वर्णन किया गया है। इसके पश्चात् जानकीरसिकशरण कृत 'अवधी सागर' ग्रन्थ मिलता है जिसमें श्रीकृष्ण की ही भाँति श्रीराम एवं सीता के रास, नृत्य, वन-विहार आदि का सरस वर्णन किया गया है। तदनन्तर कलानिधि कृत 'रामायण-सूचनिका' ग्रन्थ मिलता है, जिसमें रामायण की प्रमुख घटनाओं का विवरणात्मक उल्लेख किया गया है। इसके उपरान्त गुरु गोविन्दसिंह कृत 'गोविन्द रामायण', सहजराम कृत 'रघुवंश दीपक', श्रीधर कृत 'रामचरित्र', नवलसिंह उपनाम रामानुजदासशरण कृत 'रामचन्द्र-विलास' नामक प्रसिद्ध राम-काव्य मिलते हैं। इसके साथ ही रीवां नरेश महाराज विश्वनाथसिंह कृत 'रामकाव्य सम्बन्धी कितने ही ग्रन्थ मिलते हैं, जिनमें से 'आनन्द रघुनन्दन', नाटक, 'संगीत रघुनन्दन', 'आनन्द रामायण', रामचन्द्र की सवारी', 'गीता रघुनन्दन', 'रामायण' आदि प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दी में प्रेमसखी, कुशल मिश्र, रामचरणदास, मधुसूदनदास, गंगाप्रसाद व्यास, सर्वसुखशरण, भगवानदास खत्री, गंगाराम, रामगोपाल, परमेश्वरीदास, गणेश, रामगुलाम द्विवेदी, जनकलाड़िलीशरण, गिरिधरदास प्रभृति कितने ही हिन्दी के ऐसे छोटे छोटे कवि मिलते हैं, जिन्होंने राम-कथा सम्बन्धी काव्य लिखे हैं और जिनमें रामायण के कतिपय अंशों का सुन्दर वर्णन मिलता है। इनमें से मधुसूदनदास कृत 'रामाश्वमेघ' ग्रन्थ तुलसी कृत 'रामचरितमानस' के आदर्श पर ही लिखा गया है जो अन्य सभी ग्रन्थों की अपेक्षा श्रेष्ठ है।

आधुनिक युग में भी राम-कथा सम्बन्धी कितने ही काव्यों का प्रणयन हुआ है, जिनमें से रामचरित उपाध्याय कृत 'रामचरित चिन्तामणि', 'मैथिलीशरण गुप्त कृत 'साकेत', रामनाथ ज्योतिषी कृत 'श्रीरामचन्द्रोदय', अयोध्यासिंह उपाध्याय कृत 'वैदेही-वनवास', डा० बलदेवप्रसाद मिश्र कृत 'साकेत-सन्त', हरदयालुसिंह कृत 'रावण महाकाव्य', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' कृत 'उर्मिला' काव्य प्रसिद्ध हैं।

इस प्रकार रामकाव्य सम्बन्धी सम्पूर्ण वाङ्मय का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि तुलसी ने जिस राम-काव्य का वर्णन किया है वह 'नानापुराण-निगमागमसम्मत' होने पर भी अन्य सभी राम-काव्यों की अपेक्षा अपनी कतिपय विशिष्टताओं से परिपूर्ण है। इसमें तुलसी ने

एक आदर्श समाज एवं आदर्श धर्म की प्रतिष्ठा की है और पात्रों के आदर्श चरित्र द्वारा लोकहित एवं लोकमंगल की शिक्षा देते हुए सम्पूर्ण विश्व के मानवों के सम्मुख आदर्श जीवन की रूपरेखा प्रस्तुत की है। तुलसी का सम्पूर्ण राम-काव्य अपनी गम्भीरता, प्रभावोत्पादकता, सरसता, सुन्दरता एवं भावप्रेषणीयता में सर्वोपरि है। उत्तरी भारत में तो साधारण झोंपड़ी से लेकर गगनचुम्बी प्रासादों तक तुलसी के राम-काव्य को श्रद्धा एवं आदर प्राप्त है उससे सम्पूर्ण जन-जीवन प्रेरणा ग्रहण करता है। तुलसी ने राम के जिस आदर्श चरित्र की स्थापना की है, उसका स्वरूप पूर्ववर्ती एवं परवर्ती किसी भी राम-काव्य में दृष्टिगोचर नहीं होता। साथ ही तुलसी ने काव्य की दृष्टि से अपने काव्य में जो गुरुता, गम्भीरता एवं माधुर्य की सृष्टि की है, वह भी अनुपम एवं अद्‌भुत है। उसकी समता करना भी अन्यत्र दुर्लभ है। इसके साथ ही 'नाना-पुराण-निगमागम-सम्मत' एवं 'छहों शास्त्र सब ग्रन्थन को रस' होकर भी तुलसी का काव्य मौलिकता में अन्य सभी काव्यों की अपेक्षा श्रेष्ठ माना जाता है, क्योंकि उसमें तुलसी ने अपनी अद्‌भुत रचना-चातुरी, नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा, विलक्षण उद्‌भावना-भक्ति, उर्वर कल्पना एवं उत्कृष्ट काव्य-कला के योग से एक ऐसे दिव्य एवं भव्य काव्य का निर्माण किया है जिसकी तुलना में कोई भी पूर्ववर्ती एवं परवर्ती काव्य नहीं ठहरता। यही कारण है कि गोस्वामी तुलसीदास मार्मिक प्रसंगों के वर्णन की दृष्टि से, सुव्यवस्थित कथा-योजना की दृष्टि से, श्रीराम में भक्ति, शील एवं सौन्दर्य की प्रतिष्ठा की दृष्टि से, सैद्धान्तिक समन्वय की दृष्टि से, उच्चकोटि की शिष्टता एवं साधुता की स्थापना की दृष्टि से तथा उत्कृष्ट शील-निरूपण एवं काव्य-सौष्ठव की दृष्टि से सर्वोपरि है और इसीलिए वे राम-काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं।